सुभाषित-दैनन्दिनम्

Contents

[उद्यमेन हि 1](#_Toc379753166)

[गते शोकं न 1](#_Toc379753167)

[वरं पर्वतदुर्गेषु 3](#_Toc379753168)

[विद्या विवादाय 3](#_Toc379753169)

[छायामन्यस्य 4](#_Toc379753170)

[गच्छन् पिपीलको 6](#_Toc379753171)

[श्रूयतां धर्मसर्वस्वं 7](#_Toc379753172)

[विदेशेषु धनं 8](#_Toc379753173)

[माता शत्रुः 8](#_Toc379753174)

[अवश्यमनुभोक्तव्यं 10](#_Toc379753175)

[आचार्यात्पादमादत्ते 11](#_Toc379753176)

[वृश्चिकस्य विषं 12](#_Toc379753177)

[उपकारोऽपि 13](#_Toc379753178)

[शकटं पञ्चहस्तेषु 14](#_Toc379753179)

[रूपयौवनसंपन्नाः 18](#_Toc379753180)

[आयुः कर्म च 20](#_Toc379753181)

[सत्यं माता 22](#_Toc379753182)

[धर्मो जयति 24](#_Toc379753183)

[मातृवत्परदारेषु 25](#_Toc379753184)

उद्यमेन हि

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।  
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥   
udyamena hi sidhyanti kāryāṇi na manorathaiḥ |  
na hi suptasya siṁhasya praviśanti mukhe mṛgāḥ ||  
कार्याणि kāryāṇi  - works / deeds - дела  
सिध्यन्ति sidhyanti - become accomplished - исполняются  
हि hi - surely / only - лишь  
उद्यमेन udyamena - by effort - усердием  
न मनोरथैः na manorathaiḥ - not by fancies - (а) не фантазиями  
मृगाः mṛgāḥ deers - олени  
हि hi - surely - ведь  
न प्रविशन्ति na praviśanti - do not come - не залезают  
मुखे mukhe - into the mouth - в рот  
सुप्तस्य सिंहस्य suptasya siṁhasya - of the sleeping lion - спящего льва

Russian meaning - Усилиями вершатся дела, [а] не [просто] мечтанием;

[по своей воле] животные не войдут в пасть спящему льву.

1249. (470.) Durch Anstrengung kommen ja Werke zu Stande, nicht

durch Wünsche: es laufen ja die Gazellen nicht in den Rachen eines schlafenden Löwen. [SPRUCHE 1870-i]

# गते शोकं न

गते शोकं न कुर्वीत भविष्यं नैव चिन्तयेत्।

वर्तमानेषु कालेषु वर्तयन्ति विचक्षणाः॥

(पाठ. [[1]](#footnote-1)गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्। वर्तमानेषु कालेषु वर्तनीयं विचक्षणैः, वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः)  
gate śokaṁ na kurvīta bhaviṣyaṁ naiva cintayet|   
vartamāneṣu kāleṣu vartayanti vicakṣaṇāḥ||  
गते gate (loc.) - about the past - о прошлом  
शोकम् śokam (acc.) - grief - печали  
न कुर्वीत na kurvīta (opt.3sg.) - (one) should not make - пусть не делает  
भविष्यम् bhaviṣyam (acc.) - о будущем  
न चिन्तयेत्  na cintayet (opt.3sg.) - (one) should not worry - пусть не беспокоится  
एव eva - at all - вовсе  
वर्तमानेषु कालेषु vartamāneṣu kāleṣu ([loc.pl](http://loc.pl/).) -  in the present time - в настоящем времени  
वर्तयन्ति vartayanti (pr.3pl.) - exist - существуют / находятся  
विचक्षणाः vicakṣaṇāḥ ([nom.pl](http://nom.pl/).) - wise (men) - мудрые  
Не надо горевать о прошлом, и не надо беспокоиться о будущем, мудрые живут в настоящем времени.

2072. Um Vergangenes soll man nicht trauern, an Zukünftiges nicht denken: Weise leben in der Gegenwart.

Um Vergangenes soll man nicht trauern, an Zukünftiges

nicht denken, nur um das, was die Gegenwart heischt, sollen Weise sich

kümmern. [SPRUCHE 1870-i]

# वरं पर्वतदुर्गेषु

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।

न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥  
varaṁ parvatadurgeṣu bhrāntaṁ vanacarai saha|   
na mūrkhajanasamparka surendrabhavaneṣvapi||  
वरम् varam - better - лучше  
पर्वत-दुर्गेषु parvata-durgeṣu ([loc.pl](http://loc.pl/).) - in mountains and inpassable places - в горах и дебрях  
भ्रान्तम् bhrāntam - wandering - блуждание  
वनचरैः सह vanacaraiḥ ([ins.pl](http://ins.pl/).) saha - together with wild animals - вместе с лесными обитателями  
न na - not - (лишь бы) не  
सम्पर्कः samparkaḥ - mixing / meeting - встреча  
मूर्ख-जन- mūrkha-jana- - with stupid people - с глупыми людьми  
अपि api - even - пусть даже  
भवनेषु bhavaneṣu ([loc.pl](http://loc.pl/).) - in the palaces - во дворцах  
सुरेन्द्र- sura\_indra- - of the king of gods - царя богов  
Лучше бродить в горах и дебрях с диким зверьём,  
лишь бы не встречаться с дураками, пусть даже во дворце царя богов.

5975. (2746.) Besser mit Thieren des Waldes in undurchdringlichen

Gebirgen umherzuirren, als mit Thoren selbst in des Götterfürsten Palästen

zu verkehren. [SPRUCHE 1873-iii]

# विद्या विवादाय

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।

खलस्य साधोर्विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥  
vidyā vivādāya dhanaṁ madāya śaktiḥ pareṣāṁ paripīḍanāya|   
khalasya sādhorviparītametajjñānāya dānāya ca rakṣaṇāya||  
खलस्य khalasya (gen.) - the wicked man's - у дурного человека  
विद्या vidyā - knowledge - знание  
विवादाय vivādāya (dat.) - (is) for quarrel - для спора  
धनम् dhanam - money - деньги  
मदाय madāya (dat.) - for hilarity - для развлечения  
शक्तिः śaktiḥ - power - сила  
परिपीडनाय paripīḍanāya (dat.) - for torturing - чтобы мучить  
परेषाम् pareṣām ([gen.pl](http://gen.pl/).) - of others - других  
साधोः sādhoḥ (gen.) - of the good man - у доброго человека  
एतद् etad - these - это  
विपरीतम् viparītam - (are) opposite - наоборот  
ज्ञानाय jñānāya (dat.) - for knowledge - для знания  
दानाय dānāya (dat.) - for giving - для давания  
च ca - and - и  
रक्षणाय rakṣaṇāya (dat.) - for protection - для защиты  
  
У низкого человека знание для спора, деньги для развлечений, сила для притеснения других, у доброго человека (всё) это наоборот: для знания, для щедрости и для защиты.

6099. (2800.) Dem Bösewicht dient Gelehrsamkeit zum Streit, Geld

zum Hochmuth, Macht zur Bedrückung Anderer; dem Edlen zu entgegengesetzten

Zwecken: zur Vermehrung der Kenntnisse, zum Spenden und zur

Beschützung. [SPRUCHE 1873-iii]

# छायामन्यस्य

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे ।

फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव ॥ (पाठ. छायामन्यस्य कुर्वन्ति स्वयं तिष्ठन्ति चातपे ।

फलन्ति च परार्थे च नात्महेतोः महाद्रुमाः॥)

 (वृक्षाः) अन्यस्य छायां कुर्वन्ति। स्वयम् आतपे तिष्ठन्ति ।

(तेषां) फलानि अपि परार्थाय (सन्ति)। वृक्षाः सत्पुरुषा इव (सन्ति)॥

anvayaḥ-

(vṛkṣāḥ) anyasya chāyāṁ kurvanti। svayam ātape tiṣṭhanti ।

(teṣāṁ) phalāni api parārthāya (santi)। vṛkṣāḥ satpuruṣāḥ iva (santi) ॥

(деревья) для другого тень создают, сами на жаре стоят,

(их) плоды тоже для других, деревья - как добрые люди.

 अन्यस्य - anyasya (gen.) - for others - для другого

छायाम् - chāyām (acc.) - shade - тень

कुर्वन्ति - kurvanti (pr. 3 pl.) - (they) do - создают,

स्वयम् - svayam - themselves - сами

आतपे - ātape (loc.) - in heat, under Sun - на жаре / на солнце

तिष्ठन्ति - tiṣṭhanti (pr. 3 pl.) - (they) stand - стоят,

फलानि - phalāni - fruits - плоды

अपि - api - also - тоже / даже

परार्थाय - para\_arthāya (dat.) - for other's sake - для пользы других,

वृक्षाः - vṛkṣāḥ - Trees  - деревья

इव - iva - (are) like, same as - как / словно

सत्पुरुषाः - sat-puruṣāḥ - Noble persons - добрые люди

Деревья - словно добрые люди: тень создают для других, (а) сами на солнце стоят; (и) плоды (их) тоже для пользы других.

2307. (921.) Grosse Bäume machen Andern Schatten und stehen selbst

in der Sonnengluth, tragen Früchte für Andere, nicht für sich. (Tr. for नात्महेतोः महाद्रुमाः॥) [SPRUCHE 1872-ii]

# गच्छन् पिपीलको

गच्छन् पिपीलको याति, योजनानां शतान्यपि।

अगच्छन् वैनतेयोऽपि, पदमेकं न गच्छति॥  
gacchan pipīlako yāti yojanānāṁ śatānyapi |  
agacchan vainateyo 'pi padam ekaṁ na gacchati ||

पिपीलकः गच्छन् योजनानां शतानि अपि याति, वैनतेयः अगच्छन् एकं पदम् (अपि) न गच्छति।

pipīlakaḥ gacchan yojanānāṁ śatāni api yāti,  vainateyaḥ api agacchan ekaṁ padam (api) na gacchati.  
Идущий муравей даже сотни йоджан проходит,   
не идущий, даже Гаруда, (даже) одного шага не проходит.  
पिपीलकः pipīlakaḥ - ant - муравей  
गच्छन् gacchan - moving, walking - идущий  
शतानि śatāni (acc. pl.) - hundreds - сотни  
योजनानां yojanānāṁ (gen. pl.) of yojanas - йоджан (мера расстояния)  
अपि api - also - даже  
याति yāti - goes - идёт, проходит  
वैनतेयः vainateyaḥ - son of vinatā, garuḍa, the king of birds (Eagle) - Гаруда, царь птиц  
अगच्छन् agacchan - not moving - не идущий, не движущийся  
एकं पदम् ekaṁ padam (acc.) - one step - один шаг  
न गच्छति - (does) not go - не проходит  
Идущий муравей проходит даже тысячи километров, а (кто) не идущий, (будь он) даже (царь птиц) Гаруда, (и) одного шага не проходит.

Not found in [SPRUCHE 1870-i]

# श्रूयतां धर्मसर्वस्वं

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैव विचार्यताम् ।  
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषान्न समाचरेत् ॥ (पाठ. श्रुत्वा चैवावधार्यताम्)

śrūyatāṃ dharmasarvasvaṃ śrutvā caiva vicāryatām ।  
ātmanaḥ pratikūlāni pareṣānna samācaret ॥

धर्म-सर्वस्वं श्रूयताम्। श्रुत्वा च एव विचार्यताम् ।   
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषान् न समाचरेत् ॥

dharma-sarvasvaṃ śrūyatām | śrutvā ca eva vicāryatām |   
ātmanaḥ pratikūlāni pareṣān na samācaret  ||

श्रूयताम् śrūyatām (imper. pass. 3sg.) - let be heared - пусть быть услышана  
धर्म-सर्वस्वम् dharma-sarvasvam - essence of dharma - суть дхармы, суть благодетельности  
च एव ca eva- and - и  
श्रुत्वा śrutvā (ger.) - after hearing - услышав  
विचार्यताम् vicāryatām (imper. pass. 3sg.) - let be pondered - пусть будет обдумана  
प्रतिकूलानि pratikūlāni - unpleasant (things) - неприятные (вещи)  
आत्मनः ātmanaḥ (gen.) - of the self - для себя  
परेषान् pareṣān (acc. pl.) - to others - другим  
न समाचरेत् na samācaret (opt. 3sg.) - never, do not - should do - не должен делать  
Да будет услышана суть благодетели, а будучи услышанной, да будет (она) обдумана: неприятное для себя другим не надо делать.

6579. (3047.) Höre die Summe des Gesetzes und, wenn du sie gehört

hast, so beherzige sie: was dir selbst nicht gefallen würde (wenn man es dir

thäte), das thue Andern nicht. [SPRUCHE 1873-iii]

# विदेशेषु धनं

विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः।  
परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम्॥

videśeṣu dhanaṁ vidyā vyasaneṣu dhanaṁ matiḥ |  
paraloke dhanaṁ dharmaḥ śīlaṃ sarvatra vai dhanam ||  
विदेशेषु videśeṣu (loc. pl.) - in foreign countries - в чужих странах  
धनं - money, wealth - деньги, богатство, имущество  
विद्या - knowledge - знание  
व्यसनेषु vyasaneṣu (loc. pl.) - in adversities - в бедах  
मतिः matiḥ - intellect - ум  
परलोके para-loke (loc.) - in next-world (in Life after death) - в мире ином  
धर्मः - virtues - религия, праведность  
शीलं - character - добродетель  
सर्वत्र - everywhere - везде  
वै - indeed - конечно

На чужбине богатство - знания, в бедах богатство - смекалка,  
в мире ином богатство - праведность, и повсюду богатство - добродетель.

Not found in [SPRUCHE 1873-iii]

# माता शत्रुः

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।   
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥-चाणक्यः   
mātā śatruḥ pitā vairī yena bālo na pāṭhitaḥ |

na śobhate sabhāmadhye haṃsamadhye bako yathā || - cāṇakyaḥ

माता - mātā - mother - мать  
शत्रुः - śatruḥ - enemy - враг  
पिता - pitā - father - отец  
वैरी - vairī - opponent - враг  
येन - yena (ins.) - by whom - кем  
बालः - bālaḥ - child - ребёнок  
न पाठितः - na pāṭhitaḥ - is not educated - не обучен  
न शोभते - na śobhate - does not look proper - (он) не блистает  
सभामध्ये (loc.) - sabhāmadhye - in meeting - на собрании (мудрецов)  
यथा - yathā - like - как  
बकः - bakaḥ -  heron or crane - цапля  
हंसमध्ये (loc.) - haṃsamadhye - among swans - среди лебедей  
( चाणक्यः cāṇakyaḥ - Чанакья )  
Мать - враг (и) отец - недруг, которыми ребёнок не обучен.  
Не блистает (он) на собраниях, как цапля среди лебедей.  
(Чанакья.)

4800. (2170.) Mutter und Vater erscheinen als Feinde und Widersacher

des Sohnes, wenn sie ihn nicht unterrichtet haben, da er alsdann in der Gesellschaft eben so wenig glänzt wie ein Reiher unter Flamingos. [SPRUCHE 1873-iii]

# अवश्यमनुभोक्तव्यं

अवश्यमनुभोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।  
नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥  
avaśyam anubhoktavyaṁ kṛtaṁ karma śubhāśubham |  
nābhuktaṁ kṣīyate karma kalpakoṭiśatairapi ||  
कृतं कर्म - kṛtaṃ karma (n.) - performed action - совершённое действие, прошлая карма  
(здесь karma - карма, результат прошлых действий)  
शुभाशुभम् - śubha-aśubham (n.) - auspicious or/and inauspicious - благое и неблагое  
अवश्यम् - avaśyam - definitely - непременно, обязательно  
अनुभोक्तव्यम् - anubhoktavyam (n.) - has to suffer - должна быть испытана  
अभुक्तं कर्म - abhuktaṃ karma (n.) - unenjoyed karma - неиспытанная карма  
अपि - api - even - даже  
कल्प-कोटि-शतैः - kalpa-koṭi-śataiḥ (ins. pl.) - by billions of kalpas - за миллиарды кальп  
(kalpa - время мироздания, день Брахмы, на закате которого мир уничтожается,  
koṭi-śata  = 10 000 000\*100 = 1 000 000 000)  
न क्षीयते - na kṣīyate - does not decay - не исчезает  
Хорошая и плохая карма за совершённое непременно будет получена,  
а неполученная карма не исчезает даже за миллиарды кальп.

Not found in [SPRUCHE 1873-iii]

# आचार्यात्पादमादत्ते

आचार्यात्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया ।  
पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च ॥  
ācāryāt pādam ādatte pādaṃ śiṣyaḥ svamedhayā |  
pādaṃ sabrahmacāribhyaḥ pādaṃ kālakrameṇa ca ||  
पादम् - pādam (acc.) - one fourth - четверть  
शिष्यः - śiṣyaḥ - student - ученик  
आदत्ते - ādatte - obtaines - берёт  
आचार्यात् - ācāryāt (abl.) - from Teacher - от учителя  
पादं - pādaṃ - one fourth - четверть  
स्वमेधया - sva-medhayā (ins. f.) - by his own understanding - своим умом  
पादं - pādaṃ - one fourth - четверть  
सब्रह्मचारिभ्यः - sa-brahmacāribhyaḥ (abl. pl.) - co-students, fellow learners - от со-послушников, от соучеников, от однокашников  
च ca - and - и  
पादम् - pādam - one fourth - четверть  
काल-क्रमेण - kālakrameṇa (ins.) - by passage of time - с течением времени  
Четверть ученик получает от учителя, четверть - своим умом,  
четверть - от соучеников и четверть - с течением времени.

Not found in [SPRUCHE 1870-i]

# वृश्चिकस्य विषं

वृश्चिकस्य विषं पुच्छं मक्षिकायाः विषं शिरः ।  
तक्षकस्य विषं दन्तं सर्वांगं दुर्जनस्य च ॥ (पाठ. Verse starts with तक्षकस्य विषं दन्ते..; (Order of padas changed in Spruche 1872ii) सर्वांगे दुर्जनो विषम्)  
vṛścikasya viṣaṃ pucchaṃ makṣikāyāḥ viṣaṃ śiraḥ |  
takṣakasya viṣaṃ dantaṃ sarvāṃgaṃ durjanasya ca ||

वृश्चिकस्य - vṛścikasya (gen.) - of scorpion - у скорпиона  
विषम् - viṣam - poison - яд  
पुच्छम् - puccham - tail - хвост  
मक्षिकायाः - makṣikāyāḥ (gen. f.) - of fly - у мухи  
शिरः - śiraḥ - head - голова  
तक्षकस्य - takṣakasya (gen.) - of snake (Name of one of the principal serpents) - у (царя змей) Такшаки   
दन्तम् - dantam - teeth - зуб  
(тут подозрительно, что danta стоит в среднем роде, тогда как обычно в мужском)  
च ca - and - а  
दुर्जनस्य - dur-janasya (gen.) - of wicked man - у дурного человека  
सर्वाङ्गम् - sarva-aṅgam - whole body - всё тело  
У скорпиона ядовитый хвост, у мухи ядовитая голова,  
у (царя змей) Такшаки ядовитый зуб, а у дурного человека - всё тело.  
Вариант субхашиты с локативом:

2471. (4099.) Des Schlangendämons Takshaka Gift steckt im Zahne,

der Stechfliege Gift ist der Kopf, des Scorpiones Gift der Schwanz, der böse

Mensch ist am ganzen Leibe Gift.  
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे मक्षिकायाश्च मस्तके ।

तक्षकस्य विषं दन्ते सर्वांगे दुर्जनस्य च ॥

vṛścikasya (6) viṣaṁ pucche (7) makṣikāyāś (6) ca mastake (7) |  
takṣakasya (6) viṣaṁ dante (7) sarvāṅge (7) durjanasya (6) ca ||  
У скорпиона яд в хвосте, а у мухи - в голове,  
у Такшаки яд в зубе, а у дурного человека- во всём теле.  
Ещё вариант последней пады -  
... सर्वाङ्गे दुर्जनस्य तत् ॥  
... sarvāṅge (7) durjanasya (6) tat ||  
... у дурного человека он во всём теле.

# उपकारोऽपि

उपकारोऽपि नीचानामपकाराय वर्तते ।  
पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धम् ॥ --नीतिसारः  
upakāro'pi nīcānām apakārāya vartate |  
payaḥpānaṃ bhujaṅgānāṃ kevalaṃ viṣavardhanam || --nītisāraḥ

अपि - api - even - даже  
उपकारः - upakāraḥ - help, assistance - помощь  
नीचानाम् - nīcānām (gen. pl.) - of the low people - среди низких (людей)  
अपकाराय - apakārāya (dat.) - for harm - во вред  
वर्तते - vartate - it is - выходит  
पयःपानम् - payaḥ-pānam - giving milk to drink - питьё молока  
भुजङ्गानाम् - bhujaṅgānām (gen. pl.)  - of the snakes - у змей  
केवलम् - kevalam - alone, only - лишь, только  
विषवर्धनम् - viṣa-vardhanam - increasing poison - умножение яда  
(नीतिसारः - nīti-sāraḥ - трактат "Суть (правильного) поведения")  
Даже помощь низким людям оборачивается во вред,  
от питья молока у змей только больше яда. (Нитисара)  
В Паньчатантре:

Not found in [SPRUCHE 1870-i] in this पाठ. पाठान्तरम् is here-

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।  
पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्॥  
upadeśo hi mūrkhāṇāṁ (6pl.) prakopāya (4) na śāntaye (4) |  
payaḥ-pānaṁ bhujaṅgānāṁ (6pl.) kevalaṁ viṣa-vardhanam ||  
Ведь совет у дураков - к злости, не к успокоению,  
питьё молока у змей - лишь умножение яда.

1287. (489.) Belebrung reizt Tboren ja nur zum Zorn, beruhigt sie aber nicht: Genuss von Milch vermehrt nur das Gift der Schlangen. [SPRUCHE 1870-i]

# शकटं पञ्चहस्तेषु

शकटं पञ्चहस्तेषु दशहस्तेषु वाजिनम् ।  
गजं हस्तसहस्रेषु दुर्जनं दूरतस्त्यजेत् ॥ (पाठ. गजं हस्तसहस्रे च दुष्टं दूरे च वर्जजेत् ॥)  
śakaṭaṃ pañcahasteṣu daśahasteṣu vājinam |  
gajaṃ hastasahasreṣu durjanaṃ dūratas tyajet ||

त्यजेत् - tyajet (opt.) - should leave out - должен оставить, следует оставить  
शकटम् - śakaṭam (acc.) - chariot - телегу, повозку  
पञ्चहस्तेषु - pañca-hasteṣu (loc. pl.) - in 5 hand-lengths - в 5-и хастах  
(hasta - "рука" - мера длины, соответствующая расстоянию от локтя до кончика вытянутого среднего пальца, около 0.5 метра, ~ рус. локоть)  
वाजिनम् - vājinam (acc.) - horse - коня  
दशहस्तेषु - daśa-hasteṣu (loc. pl.) - in 10 hand-lengths - в 10-и хастах  
गजम् - gajam (acc.) - elephant - слона  
हस्तसहस्रेषु - hasta-sahasreṣu (loc. pl.) - in 1000 hand-lengths - в 1000 хастах  
दुर्जनम् - durjanam (acc.) - wicked person - дурного человека  
दूरतः - dūrataḥ - in long distance - вдалеке  
Следует оставить (т.е. "держжаться от") телегу в 5-и хастах, коня - в 10-и хастах,   
слона - в 1000 хастах, дурного человека - вдалеке.

6341. (5048.) Einen Karren meide man auf fünf Ellen, ein Pferd auf zehn, einen Elphanten auf au tausend und einen Bösewicht schon von fern. [SPRUCHE 1873-iii]

\_ \_ \_ \_ \_ \_   
  
Другой вариант второй строки:

शकटं पञ्चहस्तेषु दशहस्तेषु वाजिनम् ।

गजं हस्तसहस्रेण दुष्टं दूरेण वारयेत्॥  
śakaṭaṁ (2)  pañcahasteṣu (7pl.) daśahasteṣu (7pl.) vājinam (2)  |  
gajaṁ (2) hasta-sahasreṇa (3) duṣṭaṁ (2) dūreṇa (3) vārayet (caus.opt.) ||  
Телегу - в пяти хастах, в десяти хастах - коня,  
слона - в тысяче хаст, злого надо держать вдалеке.  
\_ \_ \_ \_ \_ \_   
У Бётлинга:  
5048. Einen Karren muss man auf fünf Ellen meiden, Pferde auf zehn, einen Elephanten auf tausend; um sich einen Bösewichts zu entledigen, muss man das Land verlassen. (Vṛddha-Сāṇakya 7.7). Eine Variente von Spruch 3348.  
शकटं पञ्जहस्तेन दशहस्तेन वाजिनः।  
हस्ती हस्तसहस्रेण देशत्यागेन दुर्जनः॥५०४८॥  
śakaṭaṁ (1) pañca-hastena (3) daśa-hastena (3) vājinaḥ (5/6) |  
hastī (1) hasta-sahasreṇa (3) deśa-tyāgena (3) dur-janaḥ (1) ||  
Телега - пятью хастами, (в случае) лошади - десятью хастами,  
слон - тысячей хаст, дурной человек - покиданием места (или даже покиданием страны!).  
\_ \_ \_ \_ \_

В примечании Бётлинг признаётся, что исправил эту шлоку, а в исходном тексте было वाजिनं, हस्ति и दुर्जनं. Не совсем понятно, какой падеж он имел в виду, исправляя वाजिनं (acc.) на वाजिनः. То ли gen. "(в случае) коня", то ли abl. "от коня".  
В неисправленном виде фраза тоже не вполне понятна.   
शकटं पञ्चहस्तेन दशहस्तेन वाजिनम्।  
हस्तिहस्तसहस्रेण देशत्यागेन दुर्जनम्॥७॥  
śakaṭaṁ (2) pañca-hastena (3) daśa-hastena (3) vājinam (2) |  
hasti(?)hasta-sahasreṇa (3) deśa-tyāgena (3) dur-janam (2) ||  
Если аккузатив можно объяснить в том смысле, что "такого-то (acc.) надо держать от себя на таком-то расстоянии", то во второй строке форма हस्ति то ли означает средний род, хотя слон мужского, то ли это компаунд такой странный हस्तिहस्तसहस्र "тысяча хаст слона".  
\_ \_ \_ \_ \_ \_   
Есть вариант этой фразы с отложительным падежом:  
शकटात्पञ्चहस्तेन दशहस्तेन वाजिनः।  
हस्तिहस्तसहस्रेण देशत्यागेन दुर्जनात्॥७॥  
śakaṭāt (5) pañca-hastena (3) daśa-hastena (3) vājinaḥ (5) |  
hasti(?)hasta-sahasreṇa (3) deśa-tyāgena (3) dur-janāt (2) ||  
От телеги - пятью хастами, десятью хастами - от лошади,  
от слона? - тысячью хаст, от дурного человека - покиданием места.  
И опять во второй строке непонятная форма hasti.  
\_ \_ \_ \_ \_ \_   
Другая сходная субхашита у Бётлинга, на которую он указывает:  
3348. Einen Elephanten muss man auf tausend Ellen meiden, Pferde auf hundert, gehörnte Thiere auf zehn: um sich eines Bösewichts zu entledigen, muss man den Ort verlassen. (Cāṇakya 28 bei Haeb. 314)  
हस्ती हस्तसहस्रेण शतहस्तेन वाजिनः।  
शृङ्गिणो दशहस्तेन स्थानत्यागेन दुर्जनः॥ ३३४८॥  
hastī (1) hasta-sahasreṇa (3) śata-hastena (3) vājinaḥ (5/6) |  
śṛṇgiṇo (5/6) daśa-hastena (3) sthāna-tyāgena (3) durjanaḥ (1) ||  
Слон - тысячей хаст, (в случае) коня / от коня - сотней хаст,  
(в случае) быка / от быка - десятью хастами, дурной человек - покиданием места.  
Формы vājinaḥ и śṛṇgiṇo могут двояко пониматься: gen. "в случае коня/быка" или abl. "от коня/быка".  
\_ \_ \_ \_ \_ \_  
Любопытно, что есть ещё вариант этой субхашиты, представляющий иную, более активную жизненную позицию. Этакий каламбур, с заменой расстояний на орудия и использованием слова хаста в его основном значении - "рука".  
  
हस्ती चाङ्कुशहस्तेन कशाहस्तेन वाजिनः।  
शृङ्गी लगुडहस्तेन खड्गहस्तेन दुर्जनः॥  
hastī (1) cāṅkuśa-hastena (3) kaśā-hastena (3) vājinaḥ (6) |  
śṛṇgī (1) laguḍa-hastena (3) khaḍga-hastena (3) durjanaḥ (1) ||  
Слон же - рукою с анкушей, (в случае) коня - рукою с кнутом,  
бык - рукою с палкой, дурной человек - рукою с мечом.  
(aṅkuśa - анкуша или анкус - палка с металлическим крюком, используемая для управления слоном)  
Форма vājinaḥ - abl./gen. sg. от vājin, скорее, gen., хотя если смотреть по контексту, то уместен был бы [nom.sg](http://nom.sg/). Вообще, такая несимметричность, использование в аналогичных конструкциях разных падежей сильно сбивает с толку. Да ещё падежная омонимия и прочие закавыки. При том, что общая идея фразы ясна, грамматической однозначности не получается.

# रूपयौवनसंपन्नाः

रूपयौवनसंपन्नाः विशालकुलसंभवाः ।  
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः इव किंशुकाः ॥  
rūpayauvanasaṃpannāḥ viśālakulasaṃbhavāḥ |  
vidyāhīnāḥ na śobhante nirgandhāḥ iva kiṃśukāḥ ||

रूप-यौवन- rūpa-yauvana - красотой и юностью  
-संपन्नाः -saṃpannāḥ (pl.) - наделённые  
विशाल-कुल-  viśāla-kula- - из могучего рода  
-संभवाः -saṃbhavāḥ (pl.) - происходящие  
विद्या-हीनाः vidyā-hīnāḥ (pl.) - лишённые знаний  
न शोभन्ते na śobhante -  (они) не блистают, не становятся украшением  
इव iva - словно  
निर्गन्धाः nirgandhāḥ (pl.) - лишённые запаха  
किंशुकाः kiṃśukāḥ (pl.) - (деревья) кимшуки  
Красивые, юные и родовитые без знаний смотрятся тускло, подобно лишённым запаха (цветам дерева) кимшука.

5795. (2637.) Diejenigen, die mit Schönheit und Jugend ausgestattet sind und aus hohem Geschlecht stammen, aber des Wissens ermangeln, üben keinen Zauber, eben so wenig wie die geruchlosen Kiṁçuka. (did not get m with tilde as in text.) [SPRUCHE 1873-iii]

\_ \_ \_ \_ \_ \_

Ветви дерева kiṁśuka (известного также как  palāśa, ḍhāk, Flame of the Forest, Parrot Tree) весной покрываются ярко-красными, но непахучими цветами. Автор субхашиты проводит сравнение - как будет разочарован тот, кто попытается понюхать красивые цветы кимшуки и не найдёт в них аромата, так же обманется и тот, кто пообщается с молодым и красивым дураком. Однако такое визуальное сравнение неудачно. Ведь цветы, пусть и без запаха, в любом случае остаются яркими и привлекают внимание. Своей яркостью и красотой (śobhā)  они не перестают радовать глаз, а потому про них никак нельзя сказать, что они "na śobhante". Тогда как у человека глупость вполне может затмить и красоту, и юность, и убедившись, что собеседник дурак, смотреть на него желания уже не возникает.  
Говорят, что название kiṁśuka дано оттого, форма цветов напоминает клюв попугая - kiñcit śuka iva "несколько похоже на попугая".

# आयुः कर्म च

आयुः कर्म च वित्तञ्च विद्या निधनमेव च ।  
पञ्चैते ननु कल्प्यन्ते गर्भगत्त्वेन देहिनाम् ॥ चाणक्यनीतिः (पाठ. पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः)

āyuḥ karma ca vittañca vidyā nidhanam eva ca |

pañcaite nanu kalpyante garbhagattvena dehinām || cāṇakyanītiḥ  
आयुः - āyuḥ - life-span - жизнь

च ca - and - и

कर्म - karma - occupation - дело

च ca - and - и

वित्तम् - vittam -  wealth - достаток  
विद्या - vidyā - education - знание  
एव च - eva ca - and - и  
निधनम् - nidhanam - death - смерть  
पञ्च एते - pañca ete (pl. m.) - these five - эти пять  
ननु - nanu - indeed - несомненно  
कल्प्यन्ते - kalpyante (pass.) - arranged - определяются, создаются  
देहिनाम् - dehinām (gen. pl.) - for human-beings - у имеющих тело, у людей  
गर्भगत्त्वेन - garbhagattvena (ins.) - by being in womb - попаданием в чрево  
Жизнь и дело, и достаток, знание и смерть -  
эти пять несомненно определяются у людей попаданием во чрево.  
По грамматике слово garbhagattva не вполне ясное, видимо, как абстрактное имя на -tva из прилагательного  garbha-gat "вошедший в утробу"; -gat помечено у Моньера как редкое. Pañca ete "эти пять" в м.р. - ошибка, тут должен быть ср.р., в другом варианте правильно - pañca etāni.

992. (375.) Lebensdauer, Beschäftigung, Reichthum, Wissen und Tod: alle diese funf werden dem Menschen schon zu der Zeit, wenn er noch im Mutterleibe sich befindet, vorausbestimmt. [SPRUCHE 1870-i]

\_ \_ \_ \_ \_ \_

पाठान्तरम्-

आयुः कर्म च वित्तञ्च विद्या निधनमेव च ।

पञ्चैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः॥

āyuḥ karma ca vittañca vidyā nidhanameva ca |

pañcaitāni hi sṛjyante garbhasthasyaiva dehinaḥ ||  
पञ्च एतानि - pañca etāni (pl. n.) - эти пять  
हि hi - ведь  
सृज्यन्ते - sṛjyante (pass.) - создаются  
देहिनः - dehinaḥ (gen.) - у имеющего тело, у человека  
एव - eva - именно, даже (уже в то время, когда)  
गर्भस्थस्य garbha-sthasya (gen.) - у находящегося в утробе  
Жизнь и дело, и достаток, знание и смерть -  
эти пять создаются уже у находящегося в утробе человека.  
Эта шлока есть в Паньчатантре и в Хитопадеше, и также Vṛddha-Cāṇakya 13.4.  
Ещё вариант:  
... पञ्चैतानि विलिख्यन्ते ...  
... pancaitāni vilikhyante...  
... эти пять прописываются, вырисовываются, начертываются ...

# सत्यं माता

सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखी।  
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडमी मम बान्धवाः॥ (पाठ. षडेते)  
satyaṁ mātā pitā jñānaṁ dharmo bhrātā dayā sakhī |  
śāntiḥ patnī kṣamā putraḥ ṣaḍ amī mama bāndhavāḥ | |  
सत्यम् - satyam - Truth - правда, истина  
माता - mātā-Mother - мать  
पिता - pitā-Father - отец  
ज्ञानम् - jñānam -Knowledge - знание  
धर्मः - dharmaḥ - Duty - праведность  
भ्राता - bhrātā-brother - брат  
दया - dayā-compassion - доброта, сострадание  
सखी - sakhī-friend - подруга  
शान्तिः - śāntiḥ-peace - покой  
पत्नी - patnī-wife - жена  
क्षमा - kṣamā-Forgiveness - прощение  
पुत्रः - putraḥ-Son - сын  
अमी षट् - amī (pl.) ṣaṭ -those six- те шесть  
मम - mama (gen.) - (are) my - мои   
बान्धवाः - bāndhavāḥ (pl.) -Relatives - близкие, родные  
Правда - мать, отец - знание, праведность - брат, доброта - подруга,  
спокойствие - жена, прощение - сын; эти шестеро - моя семья /моя родня /мои близкие.

6734 (5132.) Die Wahrhaftigkeit ist meine Mutter, das Wissen mein Vater, die Tugend mein Bruder, das Mitleid meine Schwester, die Gemüthsruhe mein Weib, die Geduld mein Sohn: dies sind meine sechs Angehörigen. [SPRUCHE 1873-iii]

\_ \_ \_ \_ \_ \_  
У Бётлинга:

5132. Die Wahrheit ist meine Mutter, das Wissen mein Vater, die Tugend mein Bruder, das Mitleid meine Schwester, die Gemüthsruhe mein Weib, die Geduld mein Sohn: dies sind meine sechs Angehörigen. (Vṛddha-Cāṇakya 12.11)  
सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया स्वसा।  
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रो षडेते मम बान्धवाः॥५१३२॥  
satyaṁ mātā pitā jñānaṁ dharmo bhrātā dayā svasā |  
śāntiḥ patnī kṣamā putro ṣaḍ ete mama bāndhavāḥ ||  
истина - мать, отец - знание, праведность - брат, доброта - сестра,  
покой - жена, прощение - сын; эти шесть мои близкие.  
В примечании Бётлинг указывает, что в тексте заменил: स्वसा für सखी (mahrattischen Scholien: दया हीच बहीण), शान्तिः für शान्ति, षडेते für षडैते. Этот пример показывает стиль работы Бётлинга, не стеснявшегося исправлять в текстах не понравившиеся ему места. В двух случаях он исправляет грамматическую ошибку, а в третьем меняет слово на то, которое кажется ему более уместным. Пусть он и ссылается на какой-то там комментарий, где говорится о сестре, но разница между подругой सखी и сестрой स्वसा очевидна. Действительно, по смыслу несколько странно выходит, что у человека помимо спокойной жены есть ещё и добрая подружка. Замена подружки на сестру снимает эту неловкость ситуации. Но в другом варианте текста Чанакьи вместо подружки सखी стоит друг सखा, что по смыслу тоже более, чем удовлетворительно, и не требует замены слов. Хотя несколько напрягает, что друг (सखा m.) оказывается женского рода (दया f.), как и сын (पुत्रः m. क्षमा f.), а мать и вовсе среднего (माता f. सत्यम् n.), но так уж вздумалось поэту.

# धर्मो जयति

धर्मो जयति नाधर्मः सत्यं जयति नानृतम् ।  
क्षमा जयति न क्रोधो विष्णुर्जयति नासुरः ॥  
dharmo jayati nādharmaḥ satyaṃ jayati nānṛtam |  
kṣamā jayati na krodho viṣṇur jayati nāsuraḥ ||

dharmaḥ jayati na adharmaḥ satyaṃ jayati na anṛtam |   
kṣamā jayati na krodhaḥ viṣṇuḥ jayati na asuraḥ ||

Праведность /справедливость побеждает, (а) не порок / не несправедливость,  
правда /истина побеждает, (а) не ложь,  
терпение /прощение побеждает, (а) не гнев,  
Вишну побеждает, (а) не асура/ не демон.  
धर्मः -dharmaḥ - (here)Right, justice, equity - праведность, справедливость  
जयति -jayati -wins - побеждает  
न अधर्मः -na adharmaḥ -not injustice - не порок, не несправедливость  
सत्यम् -satyam -truth - истина  
न अनृतम् -na anṛtam -not falsehood - не ложь  
क्षमा -kṣamā -Patience, forbearance, forgiveness - терпение, прощение  
न क्रोधः -na krodhaḥ -not anger, wrath - не гнев  
विष्णुः -viṣṇuḥ - Viṣṇu - Вишну  
न असुरः -na asuraḥ -not evil spirit, a demon - не асура, не демон

[SPRUCHE 1872-ii]

# मातृवत्परदारेषु

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।   
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ॥  
mātṛvat paradāreṣu paradravyeṣu loṣṭhavat |

ātmavat sarvabhūteṣu yaḥ paśyati sa paṇḍitaḥ ||  
Кто относится к чужой жене как к матери, к чужому имуществу - как к праху, ко всем существам - как к (самому) себе, - тот мудрец.  
मातृवत् mātṛ-vat -like mother - словно бы мать  
परदारेषु para-dāreṣu  (loc. pl.) -(in) others’ wives - в чужих жёнах,  
परद्रव्येषु para-dravyeṣu (loc. pl.) -(in) others possessions - в чужих вещах  
लोष्टवत् loṣṭa-vat -like a lump of earth or clay - словно бы ком земли,  
आत्मवत् ātma-vat -like self - словно бы себя  
सर्वभूतेषु sarva-bhūteṣu (loc. pl.) -(in) all beings - во всех существах  
यः yaḥ - who - кто   
पश्यति paśyati - sees - видит  
सः saḥ -he - тот   
पण्डितः paṇḍitaḥ - (is) a scholar - мудрец

4805. (2173.) Wer auf eines Andern Weib wie auf seine Mutter, auf fremdes Gut wie auf einen Erdkloss und auf alle Geschöpfe wie auf sich selbst schaut, der schaut richtig. [SPRUCHE 1873-iii]

# अदाता पुरुषस्त्यागी

अदाता पुरुषस्त्यागी धनं संत्यज्य गच्छति ।

दातारं कृपणं मन्ये मृतोऽप्यर्थं न मुञ्चति ॥

adātā puruṣastayāgī dhanaṃ saṃtyajya gacchati |

dātāraṃ kṛpaṇaṃ manye mṛto'pyarthaṃ na muñcati ||

अदाता - adātā - non-giver - не дающий

पुरुषः - puruṣaḥ - man - человек

त्यागी - tyāgī - donor - отрекающийся, меценат, аскет

धनम् - dhanam (acc.) - money - деньги

सन्त्यज्य - santyajya - having left behind - оставив

गच्छति - gacchati - goes away - уходит

दातारम् - dātāram (acc.) - giver (obj.) - дающего

कृपणम् - kṛpaṇam (acc.) - miser, mean (obj.) - жадиной, скрягой, скупым

मन्ये - manye - I consider - считаю

अपि - api - even - даже

मृतः - mṛtaḥ - (when) dead - мёртвый

अर्थम् - artham (acc.) - (here) substance, objective - пользу, выгоду

न मुञ्चति - na muñcati - does not leave - не оставляет, не отпускает

Не дающий человек - отрекающийся, (ведь) деньги оставив, уходит (в мир иной).

Дающего жадиной считаю, даже умерев, (он своей) пользы не упускает.

subhAshita no. 2745. (72.), PDF Page-59, Print Book page- 108 Given as-

दातारं कृपणं मन्ये मृतोऽप्यर्थं न मुञ्चति ।

अदाता पुरुषस्तयागी धनं संत्यज्य गच्छति ॥

Den Freigebigen halte ich für geizig, da er auch nach dem

Tode nicht von seinen Reichthümern (seinen guten Werken) lässt; der Geizige

dagegen ist freigebig, da er beim Hingange sein ganzes Vermögen hergiebt. [SPRUCHE-1872ii]

अदाता पुरुषस्त्यागी

अदाता पुरुषस्त्यागी धनं संत्यज्य गच्छति ।

दातारं कृपणं मन्ये मृतोऽप्यर्थं न मुञ्चति ॥

adātā puruṣas tayāgī dhanaṃ saṃtyajya gacchati |

dātāraṃ kṛpaṇaṃ manye mṛto'pyarthaṃ na muñcati ||

अदाता पुरुषः - adātā puruṣaḥ - не дающий человек

त्यागी - tyāgī - отрекающийся, меценат, аскет

धनम् - dhanam (acc.) - деньги

सन्त्यज्य - santyajya - оставив

गच्छति - gacchati - уходит

दातारम् - dātāram (acc.) - дающего

कृपणम् - kṛpaṇam (acc.) - жадиной, скрягой, скупым

मन्ये - manye - считаю

अपि - api - даже

मृतः - mṛtaḥ - мёртвый

अर्थम् - artham (acc.) - пользу, выгоду

न मुञ्चति - na muñcati - не оставляет, не отпускает

Не дающий человек - отрекающийся, (ведь) деньги оставив, уходит (в мир иной).

Дающего жадиной считаю, мёртвый даже (он своей) пользы не упускает.

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनं। (पाठ. परहस्ते च यद्धनम्)

कार्यकाले समायाते न सा विद्या न तद्धनम्॥ (पाठ. समुत्पन्ने)

pustakasthā tu yā vidyā parahastagataṁ dhanaṁ| (pāṭha. parahaste ca yad dhanam)

kāryakāle samāyāte na sā vidyā na taddhanam|| (pāṭha. samutpanne)

तु tu - но (здесь без особого смысла)

विद्या vidyā - знание

या yā - которое

पुस्तकस्था pustaka-sthā - в книгах находящееся

परहस्तगतं para-hasta-gataṃ - в чужих руках находящиеся/оказавшиеся

धनं dhanaṃ - деньги

कार्यकाले समायाते kārya-kāle samāyāte (loc.) - когда время для дела придёт (/пришло /приходит)

(kārya- дело, kāla- время, samāyāta- наступивший)

न सा विद्या na sā vidyā - это не знание

न तत् धनम् na tat dhanam - это не деньги

Знание, находящееся в книгах (и) деньги в чужих руках,

когда доходит до дела, - это не знание, это не деньги.

Знание в книгах - (словно) деньги в чужих руках,

когда бывает нужно, нету ни того знания, ни тех денег.

Варианты

... परहस्ते च यद्धनम् ... para-haste (7) ca yad dhanam ... и деньги которые в чужой руке

कार्यकाले समुत्पन्ने... kārya-kāle (7) samutpanne (7) ... когда время для дела придёт

सुभाषितं no. 4156. (1809.), PDF Page-204, Print Book page- 399

Wenn die Zeit zum Handeln da ist, dann ist Wissen, das nur im Buche steht, kein Wissen, und Geld, das in fremden Händen sich befindet, kein Geld.

[SPRUCHE-1872ii]

कोकिलानां स्वरो

कोकिलानां स्वरो रूपं नार्या रूपं पतिव्रतम् ।

विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥

kokilānāṃ svaro rūpaṃ nāryā rūpaṃ pativratam |

vidyā rūpaṃ kurūpāṇāṃ kṣamā rūpaṃ tapasvinām ||

कोकिलानाम् kokilānām (gen. pl.) - у кукушек

स्वरः svaraḥ - голос

रूपम् rūpam - красота

नार्याः nāryāḥ (gen.) - у женщины

पतिव्रतम् pati-vratam - верность мужу

विद्या vidyā - знание

कुरूपाणाम् kurūpāṇāṃ (gen. pl.) - у некрасивых, у уродов

क्षमा kṣamā - терпение

तपस्विनाम् tapasvinām (gen. pl.) - у аскетов

Красота кукушек - голос, красота женщины - верность мужу,

красота уродов - знание, красота аскетов - терпение.

subhAshita number- 1919. (741.) Printed book-Page 371, PDF -Page 195, Bohtlingk-Spruche1870i

1919. (741.) Bei den Kokila vertritt die Stimme die Stelle der Schönheit, bei Weiborn die Treue gegen den Gatten, bei Hässlichen das Wissen, bei Asketen die Geduld.

[*https://groups.google.com/forum/#!forum/nagari*](https://groups.google.com/forum/#!forum/nagari) *, 2014-04*

1. पाठान्तरम्, पाठभेदः According to Spruche 1870i, 1872ii, 1873iii [↑](#footnote-ref-1)